Toppersnotes
Unleash the topper in you

राजस्थान पुलिस कॉन्स्टेबल

राजस्थान का इतिहास एवं कला संस्कृति व कम्प्यूटर अध्ययन

SIERRA INNOVATIONS

विषय वस्तु

इतिहास व संस्कृति

1. मध्यकालीन इतिहास 1
2. आधुनिक इतिहास 83
   - 1857 की क्रान्ति 83
   - राजस्थान मे किसान आन्दोलन 89
   - जनजातिय आन्दोलन 94
   - प्रजामंडल आन्दोलन 96
3. राजस्थान का एकीकरण 107
4. कला व संस्कृति
   - प्रमुख त्यौहार 114
   - राजस्थान के लोकदेवता 131
   - राजस्थान की लोकदेवियां 139
   - लोकसन्त 146
   - सम्प्रदाय 153
   - लोकगीत 158
   - लोकगायन शैलियां 161
   - संगीत घरानें 163
   - लोक नाट्य 174
   - राजस्थान की प्रमुख जनजातियां 181
   - चित्रकला 189
   - आधुनिक चित्रकार 197
   - हस्तकला 200
   - पुरातात्विक स्थल 205
   - राजस्थान का साहित्य 214
   - राजस्थान की प्रमुख बोलियां 222
5. महत्वपूर्ण किलो व स्मारक 226
6. जिले व धार्मिक स्थल 246
7. राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व 254
8. आभूषण व वेश भूषा 267
9. dEl;Vj v/;;u 274

राजस्थान G.K.

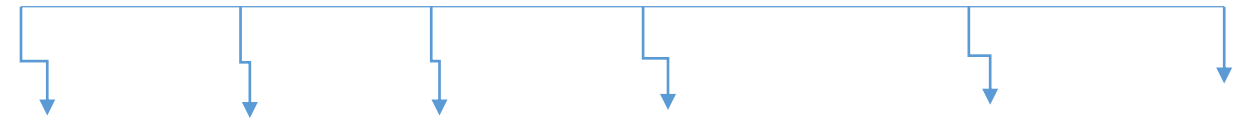

- इतिहास
- प्रशासन (राज व्यवस्था)
- भूगोल
- अर्थव्यवस्था
- कला व संस्कृति
- विज्ञान

इतिहास

मध्यकालीन इतिहास

(1) मेवाड का इतिहास:

- मेवाड के प्राचीन नाम:

मेदपाट , प्रागवाट , शिविजनपद

- "गुहिल वंश" का शासन था

566 ई. से प्रारम्भ

इस वंश की 24 शाखाएँ थी । इनमें सबसे अधिक प्रसिद्ध मेवाड के गुहिल थे ।

पहला बडा राजा बापा रावल था ।

1. बापा रावल :

वास्तविक नाम – " कालभोज"

यह हारित ऋषि का अनुयायी था । इसने हारित ऋषि के आशीर्वाद से 734 ई. में मान मौर्य (चित्तौड का राजा) को हराकर चित्तौड पर अधिकार कर लिया ।

इसने नागदा (उदयपुर) को राजधानी बनाया ।

बापा रावल ने नागदा में एकलिंगजी का मन्दिर (अभी कैलाशपुरी) बनवाया

Note: मेवाड के शासक स्वयं को एकलिंगजी का दीवान (प्रधानमंत्री) मानते थे ।

बापा रावल ने मेवाड में खुद के नाम के सिक्के चलाये

राजधानी: नागदा, आहड, चित्तौड

बापा रावल मुस्लिम सेना को हराते हुए गजनी तक चला गया था । तथा वहां के राजा सलीम को हरा दिया तथा अपने भांजे को राजा बनाया ।

रावलपिंडी ;(Pak) शहर का नाम बापा रावल के कारण पडा ।

– सी.वी.वैद्य ने बापा रावल की तुलना फ्रांस का कमांडर चार्ल्स मार्टेल से की है ।

– मेवाड में सोने के सिक्के प्रारम्भ किये । (115 ग्रेन का सिक्का)

उपाधियां –

1. हिन्दू सूरज
2. राजगुरू
3. चक्कवै (चारों दिशाओं को जीतने वाला)

2. अल्लट

अन्य नाम – आलु रावल

इसने आहड (उदयपुर) को 2nd राजधानी बनाई

इसने आहड में वराह (विष्णु भगवान का अवतार) मन्दिर बनवाया

सबसे पहले मेवाड में नौकरशाही की स्थापना की ।

इसने हूण राजकुमारी हरिया देवी से शादी की थी ।

3. जैत्र सिंह : (1213–50)

भूताला का युद्ध (1234 ई. में) ''जैत्र सिंह'' v/s इल्तुतमिश के बीच हुआ इस युद्ध में जैत्रसिंह जीत गया लेकिन इल्तुतमिश ने नागदा (उदयपुर) को उजाड दिया था इसलिए जैत्रसिंह ने चित्तौड को अपनी राजधानी बनाया ।

इस युद्ध की जानकारी ''जयसिंह सूरी'' की किताब ''हम्मीर मद मर्दन'' से मिलती है ।

जैत्रसिंह का शासनकाल ''मध्यकालीन'' मेवाड का स्वर्णकाल था ।

4. <u>रतन सिंह</u> : (1302-03)

इसका छोटा भाई कुम्भकरण नेपाल चला गया । तथा वहाँ ''राणा शाही वंश'' की स्थापना की । इस तरह से यहाँ गुहिल वंश की एक शाखा बनी ।

1303 में अलाउदीन खिलजी का चित्तौड पर आक्रमण

आक्रमण का कारण :

- अलाउदीन खिलजी की साम्राज्यवादी महत्वकांक्षा
- चित्तौड का सामरिक व व्यापारिक महत्व
- सुल्तान के लिए प्रतिष्ठा का प्रश्न था
- चित्तौड का बढता हुआ प्रभाव

रानी पद्मिनी :-

सिंहल द्वीप (श्रीलंका) की राजकुमारी थी

पिता :- गन्धर्वसेन

माता :- चम्पावती

भाई :- गोरा

<u>पद्मिनी</u>

सिंहल द्वीप (श्रीलंका) की राजकुमारी थी । (सिंहल यहाँ की जाति थी)

''राघव चेतन'' (रतनसिंह का दरबारी) ने अलाउद्दीन को पद्मिनी की सुन्दरता के बारे में बताया था ।

अलाउद्दीन खिलजी के समय ''चित्तौड में पहला साका'' हुआ

साका = जौहर (महिला) केसरिया (पुरूष)

इस युद्ध में (साके में) ''गोरा व बादल'' (रतन के सेनापति) लडते हुए मारे गये थे ।

रानी पद्मिनी ने जौहर किया

अलाउद्दीन ने चित्तौड पर आक्रमण किया और अपने बेटे ''खिज्र खाँ'' को सौप दिया । तथा चित्तौड का नाम ''खिज्राबाद'' कर दिया ।

खिज्र खाँ ने गंभीरी नदी पर पुल बनवाया था ।

खिज्र खाँ ने यहाँ पर मकबरे का निर्माण करवाया । इस मकबरे के फारसी लेख में अलाउद्दीन खिलजी को धर्म एवं पवित्रता का अवतार बताया गया है ।

थोडे दिनो बाद चित्तौड मालदेव सोनगरा को दे दिया गया ।

मालदेव सोनगरा को मुँछाला मालदेव कहा जाता था ।

अलाउद्दीन ने चित्तौड पर आक्रमण किया और अपने बेटे ''खिज्र खाँ'' को सौप दिया । तथा चित्तौड का नाम ''खिज्राबाद'' कर दिया ।

थोडे दिनों के बाद चित्तौड ''मालदेव सोनगरा'' को दे दिया ।

Note: 1. किताब :- पद्मावत (1540 ई. अवधी भाषा में लिखी गई)

लेखक :- मलिक मुहम्मद जायसी

- जेम्स टॉड तथा मुहणोत नैणसी ने भी इस कहानी को स्वीकार किया ।

सूर्यमल्ल मिश्रण ने इस कहानी को अस्वीकार किया ।

अमीर खुसरों की पुस्तक 'खजाइन उल फुतुह' (तारीख ए अलाई) में चित्तौड आक्रमण का वर्णन किया गया है ।

2. गोरा बादल री चौपाई

लेखक :- हेमरत्न सूरी (सूरि जैन होते है)

''रावल उपाधि'' का प्रयोग करने वाला ''अन्तिम राजा रतनसिंह'' था ।

नोटः (इसके बाद के सभी राजा आपने नाम के आगे राणा लगाऐंगे)

5. हम्मीरः (1326-64) राणा हम्मीर

सिसोदा गाँव (राजस्थान) के हम्मीर ने बनवीर सोनगरा को हराकर चित्तौड पर आक्रमण करके चित्तौड को जीत लिया ।

सिसोदा गाँव के कारण ''मेवाड में सिसोदिया शाखा'' (गुहिल वंश) का प्रारम्भ हुआ ।

''राणा'' उपाधि का प्रयोग करने वाला पहला राजा

हम्मीर को ''मेवाड का उद्धारक'' कहा जाता है

(क्योंकि इसमें चित्तौड को अपने कब्जे में लिया था)

इसने ''बरवडी'' (अन्नपूर्णा माता) माता का मन्दिर चित्तौड में बनवाया । यह मेवाड के गुहिल वंश की इष्टदेवी (बरवडी माता) थी ।

(मेवाड के गुहिल वंश की कुल देवी – बाणमाता)

(कुल देवी एक कुल की एक ही होती है तथा इष्ट देवी कुल की शाखाओं के अनुसार अलग – अलग होती है ।)

हम्मीर की उपाधियाँ :

1. ''विषमघाटी पंचानन'' (''कुम्भलगढ प्रशस्ति'' में कहा गया है ।)
2. ''वीर राजा'' (कुम्भा की पुस्तक ''रसिकप्रिया'' में कहा गया)
(जयदेव की गीतगोविन्द पर टीका)

6. राणा लाखा (लक्ष सिंह)

जावर में चाँदी निकलना प्रारम्भ हुई ।

- इसके समय में एक बन्जारे ने ''पिछोला झील'' का निर्माण कराया (बन्जारे उस समय व्यापारी होते थे ।)

इस झील के पास एक ''नटनी का चबूतरा'' मिलता है ।

(नट एक जाति है ।)

कुम्भा हाडा (हाडी रानी का भाई) नकली बूंदी की रक्षा करते हुऐ मारा गया । (लाखा ने ''हाडी रानी'' से शादी की थी).

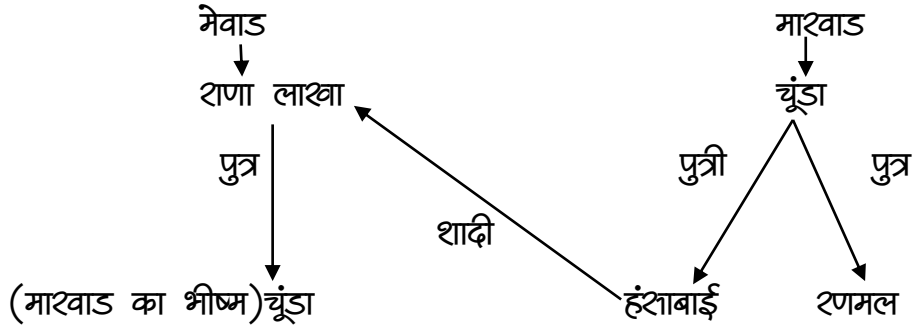

मारवाड के राजा चुन्डा ने अपनी बेटी हंसाबाई की शादी मेवाड के राजा लाखा के साथ की । इस समय लाखा के बेटे चून्डा ने यह प्रतिज्ञा की कि वह मेवाड का राजा नहीं बनेगा । बल्कि हंसाबाई के जो बेटे होंगे उनको बनाऐगा इसलिए चून्डा को ''मेवाड का भीष्म'' कहा जाता है ।

7 राणा मोकल (1421–33) (हंसाबाई का बेटा)

मेवाड का चुन्डा ने इसका राजतिलक किया ।

इस त्याग के बदले में चुन्डा को कई विशेषाधिकार (Privilage) दिये गये ।

(1) मेवाड के 16 प्रथम श्रेणी के ठिकानों में से 4 चून्डा को दिये गये । इनमें सबसे बडा ठिकाना ''सलूम्बर'' उदयपुर भी शामिल था ।

(2) सलूम्बर के सामन्त द्वारा मेवाड के राजा का राजतिलक किया जायेगा ।

(3) सलूम्बर का सामन्त मेवाड का सेनापति होगा । तथा ''हरावल'' का नेतृत्व करेगा ।

(हरावल – सेना की पहली टुकडी जो युद्ध करती है ।)

(चन्दावल – सेना की अन्तिम टुकडी जो युद्ध करती है ।)

(4) मेवाड के राजा की अनुपस्थिति में सलूम्बर का सामन्त राजधानी को संभालेगा ।

(5) मेवाड के सभी कागज पत्रों पर राजा के साथ–साथ सलूम्बर के सामन्त के भी हस्ताक्षर होंगे ।

प्रारम्भ में चून्डा मोकल का संरक्षक (Patron) था । लेकिन बाद में हंसाबाई के अविश्वास के कारण मेवाड छोडकर मालवा के राजा ''होशंगशाह'' के पास चला गया ।

अब हंसाबाई का भाई ''रणमल'' मोकल का संरक्षक बना

मोकल ने ''एकलिंगजी के मन्दिर की चारदीवारी'' का निर्माण करवाया ।

चित्तौड में समिद्धेश्वर मन्दिर (शिव मन्दिर) का पुनर्निर्माण कराया । यह मन्दिर 'भोज परमार' द्वारा बनवाया गया था । तथा पहले इसका नाम त्रिभुवन नारायण मन्दिर था ।

1433 में ''जीलवाडा'' (राजसंमन्द) नामक स्थान पर मोकल के सेनापति चाचा, मेरा, महपा पंवार ने मार दिया ।

(8) राणा कुम्भा (1433–68) 25 साल

- रणमल कुम्भा का संरक्षक था ।
- कुम्भा ने रणमल की सहायता से अपने पिता मोकल की हत्या का बदला लिया ।
- मेवाड दरबार में रणमल का प्रभाव बढ गया था । उसने सिसोदिया के नेता राघवदेव (चून्डा का भाई) जो मालवा गया था, की हत्या करवा दी ।
- हंसाबाई ने चुंडा को वापस बुलाया तथा भारमली रणमल की प्रेमिका की सहायता से रणमल की हत्या कर दी ।

क्योंकि हंसाबाई को आशंका थी कि रणमल कुम्भा को भी मार सकता है ।

रणमल का बेटा जोधा अपने भाईयों के साथ मेवाड से भाग गया तथा बीकानेर के पास काहुनी नामक गाँव में शरण ली ।

चुन्डा ने बाद में मंडोर पर अधिकार कर लिया

(मंडोर – मारवाड की राजधानी)

1453 में कुम्भा और जोधा के बीच "आंवल – बांवल की सन्धि" हुई ।

इस संधि द्वारा जोधा को मन्डोर (मारवाड की राजधानी) वापस दे दिया गया ।

सोजत (पाली) को मेवाड में मारवाड की सीमा बनाया गया,

इस सन्धि द्वारा कुम्भा ने अपनी कूटनीति के माध्यम से मारवाड को मित्र राज्य बना लिया ।

कुम्भा के शासनकाल के दौरान घटनाक्रम :

सारंगपुर का युद्ध (1437 ई.) (विजयस्तम्भ इसी दौरान बना)

कुम्भा VS महमूद खिलजी (मालवा M.P)

कारण : महमूद खिलजी ने मोकल के हत्यारों को शरण दी थी । इस युद्ध में कुम्भा जीत गया तथा जीत की याद में "विजयस्तम्भ" बनवाया ।

इसके बाद खिलजी, कुतुबुद्दीन शाह (गुजरात) के पास भाग गया ।

चाम्पानेर की सन्धि – (1456)

कुतुबुद्दीन शाह + महमूद खिलजी

(गुजरात) (मालवा)

उद्देश्य : दोनों मिलकर कुम्भा के खिलाफ लडना इस दौरान ''बदनोर का युद्ध''(भीलवाडा) हुआ

कुम्भा ने गुजरात व मालवा की संयुक्त सेना को हराया ।

कुम्भा ने सिरोही के राजा सहसमल देवडा को हराया ।

कुम्भा ने एक अलग युद्ध में नागौर के शम्स खाँ को सहायता दी तथा मुजाहिद खाँ को हराया । (ये दोनों भाई थे) शम्स खाँ भाई मुजाहिद खाँ

कुम्भा की सांस्कृतिक उपलब्धियाँ :

<u>स्थापत्य कला</u>

1. विजयस्तम्भ :- ''सारंगपुर युद्ध'' में जीत की याद में चित्तौड के किले में बनवाया था ।

अन्य नाम: -कीर्ति स्तम्भ (कुम्भा की कीर्ति को बढाने वाला)

-विष्णु ध्वज (विष्णु भगवान को समर्पित)

-गरूड ध्वज (गरूड - विष्णु का वाहन)

-मूर्तियों का अजायबघर

(इसमें 9 मंजिल में से 8वी मंजिल को छोडकर सभी में भारतीय देवी - देवताओं की मूर्तियाँ है)

-भारतीय मूर्तिकला का विश्वकोष

यह 9 मंजिला इमारत है

लम्बाई-चौडाई :- $122 \times 30\ (feet)$

वास्तुकार :- जैता (पिता), पूंजा, पोमा, नापा (पुत्र)

-विजयस्तम्भ में 3वी मंजिल में 9 बार ''अरबी भाषा'' में अल्लाह लिखा हुआ है ।

-''स्वरूप सिंह'' ने इसका पुनर्निर्माण करवाया था ।

-यह राजस्थान पुलिस व राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड का प्रतीक चिन्ह है ।

-राजस्थान की पहली इमारत जिस पर डाक टिकट जारी हुआ था ।

-''जेम्स टॉड'' ने विजयस्तम्भ की तुलना ''कुतुबमीनार'' से की ।

-''फर्ग्यूसन'' ने विजयस्तम्भ की तुलना रोम के ''टार्जन टावर'' से की ।

<u>जैन कीर्ति स्तम्भः (आदिनाथ स्तम्भ)</u>

12 वीं शताब्दी में जैन व्यापारी जीजा शाह बघेरवाल ने बनवाया

7 मंजिला इमारत है ।

यह भगवान आदिनाथ (जैन के 1st भगवान) को समर्पित है ।

कीर्तिस्तम्भ प्रशस्ति के लेखक – अत्रि, महेश

किले :-

कवि राजा श्यामलदास जी की पुस्तक वीर विनोद के अनुसार कुम्भा ने मेवाड के 84 किलों में से 32 किलो का निर्माण करवाया ।

(1) कुम्भलगढ :- (राजसमंद)

वास्तुकार – मण्डन

इस किले को मेवाड मारवाड का सीमा प्रहरी कहा जाता है ।

इसका सबसे ऊँचा महल कटारगढ है जो कुम्भा का निजी आवास था इसे <u>मेवाड की आँख</u> कहा जाता है ।

कुम्भलगढ प्रशस्ति का लेखक – महेश

इस प्रशस्ति में कुम्भा को <u>धर्म एवं पवित्रता का अवतार</u> कहा गया है

(2) अचलगढ (सिरोही)

1452 में कुम्भा ने इसका पुनर्निमाण करवाया ।

(3) बासन्ती दुर्ग – सिरोही

(4) मचान दुर्ग – मेरो पर नियंत्रण के लिए ।

(5) भोमत दुर्ग – भील जनजाति पर नियंत्रण हेतु ।

चित्तौड →
कुम्भलगढ → में कुम्भस्वामी मन्दिर का निर्माण करवाया
अंचलगढ →

चित्तौड में श्रृंगार चँवरी मन्दिर बनवाया । पुत्रवधु का नाम श्रृंगार चंवरी इसकी पुत्रवधु की याद में बनवाया

1439 में एक जैन व्यापारी ''धरणकशाह'' ने ''रणकपुर के जैन मन्दिर'' का निर्माण करवाया ।

यहाँ पर चौमुखा मन्दिर सबसे महत्वपूर्ण है इस मन्दिर में आदिनाथ भगवान की मूर्ति है । इसमें 1444 स्तम्भ है इसलिए इसे ''स्तम्भों का अजायबघर'' कहा जाता है ।

चौमुखा मन्दिर का वास्तुकार देपाक था ।

''कुम्भा'' को राजस्थान की ''स्थापत्य कला का जनक'' कहा जाता है ।

साहित्य :

कुम्भा एक अच्छा संगीतज्ञ (वीणा) था । कुम्भा के संगीत गुरू ''सारंग व्यास'' थे ।

<u>संगीत पर पुस्तके :-</u>

-सुधा प्रबन्ध

-कामराज इतिसार

-संगीत सुधा

-संगीत मीमांसा

-संगीत राज

संगीतराज 5 भागों में विभाजित है :-

-पाठ्य रत्न कोष

-गीत रत्न कोष

-नृत्य रत्न कोष

-वाद्य रत्न कोष

-रस रत्न कोष

(पढिये, गाईये, नाचो आपको बाद्य रस मिल जायेगा)

- जयदेव की गीतगोविन्द पर ''रसिकप्रिया'' नाम से टीका लिखी ।

टीका - एक छोटा ग्रन्थ होता था

- कुम्भा ने ''संगीत रत्नाकर'' व ''चण्डी शतक'' पर भी टीका लिखी थी ।

- कुम्भा ने मेवाडी भाषा में 4 नाटक लिखे थे ।
- कुम्भा "वीणा" बनाया करता था ।

<u>कुम्भा के दरबारी विद्धान :</u>

<u>विद्धान</u>	<u>पुस्तक</u>
1. कान्ह व्यास	एकलिंग महात्म्य (इससे ज्ञात होता है कि कुंभा वेद, स्मृति, मीमांसा, उपनिषद व्याकरण, साहित्य एवं राजनीति में बडा निपुण था ।
2. मेहा	तीर्थमाला
3. मण्डन	वास्तुसार देवमूर्ति प्रकरण राजवल्लभ रूपमण्डन – मूर्तिकला के बारे में कोदण्डमण्डन – धनुष निर्माण के बारे में
4. नाथा	मण्डन का भाई वास्तुमंजरी
5. गोविन्द	मण्डन का बेटा द्वार दीपिका उद्धार धोरिणी कला निधि – मंदिर के शिखर निर्माण की जानकारी
6. रमा बाई	कुम्भा की बेटी अपने पिता की तरह संगीत में रूचि रखती थी । उपाधि – वागीश्वरी इसे जावर क्षेत्र दिया गया ।

7. तिला भट्ट

8. हीरानन्द मुनि — कुम्भा के गुरू, कविराजा की उपाधि कुम्भा ने दी ।

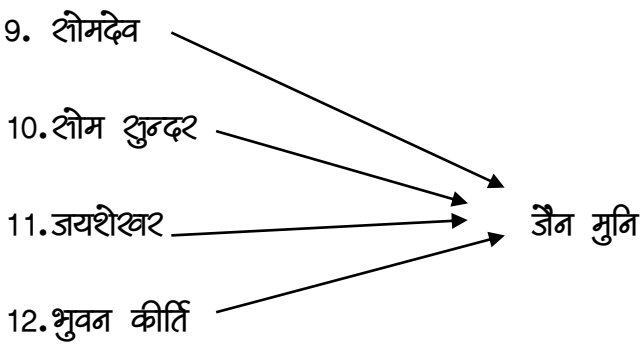

कुम्भा ने आबू जाने वाले जैन तीर्थ यात्रियों से कर लेना बन्द कर दिया था ।

<u>कुम्भा की उपाधियाँ :</u>

1. हिन्दु सुरताण	(मुसलमानों को हराने के कारण)
2. अभिनव भरताचार्य	(संगीत की उपलब्धियों के कारण)
3. राणा रासौ	(रासौ – साहित्य)
4. हालगुरू	(पहाडियों के दुर्गे जीतने के कारण)
5. चाप गुरू	(एक अच्छा धनुधर होने के कारण)
6. छाप गुरू	(छापामार (गुरिल्ला) युद्ध करने के कारण)
7. परम भागवत	विष्णु, गुप्त
8. आदि वराह	गुर्जर प्रतिहार

Note : कुम्भा की हत्या उसके बेटे ''उदा'' ने कुम्भलगढ के किले में कर दी थी ।

9. <u>रायमल – (1473–1509) : (36 साल)</u>

एकलिंग मंदिर का वर्तमान स्वरूप इसी ने बनवाया था ।

''श्रृंगार कंवर'' उसकी रानी थी । इस रानी ने घोसुण्डी (चित्तौड) में बावडी का निर्माण करवाया ।

घोसुण्डी अभिलेख : 2वीं शताब्दी ईसा पूर्व का अभिलेख ।

राजस्थान में वैष्णव धर्म(भागवत धर्म) की जानकारी देने वाला सबसे प्राचीन अभिलेख

इसमें अश्वमेध यज्ञ का वर्णन है ।

संस्कृत भाषा ब्राह्मी लिपि

पृथ्वीराज

यह रायमल का सबसे बडा बेटा था ।

इसे "उडणा राजकुमार" कहा जाता था ।

(यह जो राजा हारता था उसकी तरफ होकर लडता था)

अपनी रानी तारा के नाम पर अजमेर किले का नाम "तारागढ" कर दिया ।

कुम्भलगढ में इसकी छतरी बनी हुई है ।

जयमल

यह भी रायमल का बेटा था ।

यह सोलंकी राजाओं के खिलाफ लडता हुआ मारा गया था ।

10. राणा संग्राम सिंह (सांगा) – (1509–28) :

(यह भी रायमल का बेटा था)

अपने भाइयों से झगडा हो जाने के कारण सांगा ने श्रीनगर (अजमेर) के "कर्मचन्द पंवार" के पास शरण ली थी ।

खातोली का युद्ध (कोटा) – 1517

सांगा V/s इब्राहिम लोदी (दिल्ली का सुल्तान)

सांगा जीत गया

बाडी का युद्ध (धौलपुर) – 1519

सांगा V/s इब्राहिम लोदी

सांगा जीत गया

गागरौन का युद्ध (झालावाड) – 1519

सांगा v/s महमूद खिलजी (द्वितीय) (मालवा, M.P)

सांगा जीत गया

कारण : गागरौन का किला इस समय सांगा के दोस्त चन्देरी (M.P) के राजा मेदिनीराय के पास था ।

सांगा ने ईडर (गुजरात) के उत्तराधिकार संघर्ष में गुजरात के राजा ''मुजफ्फर शाह'' को हराया था ।

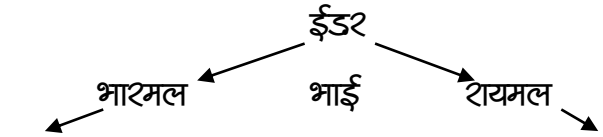

(इसका पक्ष सांगा ने लिया) (इसका पक्ष मुजफ्फर शाह ने लिया)

<u>बयाना का युद्ध (16 फरवरी, 1527ई.)</u> : (भरतपुर)

सांगा V/s बाबर

बाबर को हराया

इस समय किले का रक्षक मेहन्दी ख्वाजा (बाबर का सेनापति) था ।

बाबर ने मोहम्मद सुल्तान मिर्जा के नेतृत्व में सेना भेजी ।

<u>खानवा का युद्ध</u> : (भरतपुर) (17 March1527) :

(वीर विनोद श्यामदास के अनुसार 16 March)

बाबर ने जिहाद की घोषणा की । (धर्मयुद्ध)

– बाबर ने शराब न पीने की कसम खाई ।

– बाबर ने मुस्लिम व्यापारियों से तमगा कर हटा दिया ।

– सांगा ने राजस्थान के सभी राजाओं को पत्र लिखकर युद्ध में सहायता के लिए बुलाया । (पाती परवन)

प्रमुख राजा जो युद्ध में शामिल हुये :–

1. आमेर – पृथ्वीराज
2. मारवाड – मालदेव (गंगा (राजा) का बेटा)
3. बीकानेर – कल्याणमल (राजा – जैतसी)
4. मेडता – वीरमदेव
5. चन्देरी – मेदिनीराय
6. सलूम्बर – रतनसिंह चूण्डावत

7. वागड – उदयसिंह
8. देवलिया – वाघ सिंह
9. सादडी (चितौड) –झाला अज्जा
10. मेवात – हसन खाँ मेवाती
11. ईडर – भारमल
12. इब्राहिम लोदी का छोटा भाई महमूद लोदी

सांगा युद्ध में घायल हो गया अतः ''झाला अज्जा'' ने युद्ध का नेतृत्व किया । परन्तु बाबर युद्ध जीत गया था । जीतने (खानवा का युद्ध) के बाद बाबर ने ''गाजी की उपाधि'' (धर्म के लिए लडना) धारण की ।

- ''बसवा (दौसा)'' में सांगा का इलाज किया गया ।
- सांगा चंदेरी के मेदिनीराय की सहायता के लिए आगे बढा
- ''ईरिच (M.P)'' नामक स्थान पर सांगा के साथियों ने उसे जहर दे दिया ।
- ''कालपी (M.P)'' में सांगा की मृत्यु हो गई ।
- ''मांडलगढ (भीलवाडा)'' में सांगा की छतरी है ।

<u>सांगा की उपाधियाँ :</u>

1. हिन्दुपत
2. सैनिको का भग्नावशेष (उसके शरीर पर 80 घाव थे)

<u>खानवा में सांगा की हार के कारण</u> :

1. सांगा की सेना अलग – अलग सेनापतियों के नेतृत्व में लड रही थी अतः उनमें आपस में एकता नहीं थी ।
2. बाबर का तोपखाना और ''तुलगुमा युद्ध पद्धति'' तीन तरफ से लडना

   (यह पद्धति बाबर उज्बेकिस्तान से सीख के आया था)
3. सांगा बयाना के युद्ध के तुरन्त बाद खानवा नहीं पहुँचता है तथा वह बाबर को तैयारी के लिए समय दे देता है ।
4. सांगा खानवा के मैदान में खुद युद्ध करने के लिए उतर गया था ।
5. सांगा के कुछ साथियों ने सांगा के साथ विश्वासघात किया तथा युद्ध के बीच में ही बाबर से ही मिल गये थें ।

- रायसीन (M.P) सलहदी तँवर
- नागौर खानजादे मुस्लिम → ये बाबर से मिल गये थें ।

6. सांगा की सेना में हाथियों की संख्या अधिक थी जो युद्ध की दृष्टि से अधिक लाभदायक नहीं होते थे । जबकि बाबर की सेना में घोडों की संख्या अधिक थी ।
7. मुगल सैनिक हल्के हथियारों का प्रयोग करते थे जबकि राजपूत सैनिकों के पास भारी हथियार थे जो युद्ध की दृष्टि से कम लाभदायक थें ।

खानवा युद्ध का महत्व :

1. ''अफगानों'' तथा ''राजपूतो'' को हराने के बाद मुगल शासक सुदृढ हो गया । (उस समय अफगान भी राजस्थान में ही था)
2. खानवा अन्तिम युद्ध था जिसमें राजपूत राजा एक होकर लडे थे ।
3. सांगा अन्तिम राजा (राजपूत राजा) था जिसने दिल्ली को चुनौती देने का प्रयास किया ।
4. राजपूत सेना की सामरिक कमजोरियाँ उजागर हो गई थी ।
5. इस युद्ध ने मुगलों की राजपूतो के प्रति भविष्य की नीति निर्धारित कर दी थी । कालान्तर में अकबर ने युद्ध के स्थान पर मित्रता की नीति अपनाई ।
6. सांगा के बाद बडा हिन्दु राजा नहीं बचा । इससे हिन्दु कला व संस्कृति का नुकसान हुआ ।

Note:

- सांगा का बडा बेटा भोजराज था जिसकी शादी मीराबाई के साथ हुई थी ।
- सांगा के बाद रतनसिंह राजा बना । परन्तु यह बूँदी के राजा सूरजमल के साथ लडते हुए मारा गया था

11. विक्रमादित्य (1531–36) : (यह भी सांगा का बेटा था)

- कम उम्र में राजा बना था इसलिए इसकी माता ''कर्मावती'' इसकी संरक्षिका बनी ।
- 1533 में गुजरात के शासक ''बहादुर शाह'' ने मेवाड पर आक्रमण किया, लेकिन कर्मावती ने रणथम्भौर का किला देकर संधि कर ली ।
- 1534 में बहादुर शाह ने पुनः आक्रमण कर दिया । लडाई के लिए सक्षम न होने के कारण कर्मावती मुगल बादशाह हुमायँ को राखी भेजकर सहायता मांगती है ।
- लेकिन हुमायुँ के आने से पहले ही मेवाड में ''दूसरा साका'' हो जाता है । प्रथम साका – 1303 (राजा रतन सिंह के समय)

साका = जौहर + केसरिया

(कर्मावती ने किया) (देवलिया (प्रतापगढ) के ''बाघ सिंह'' के नेतृत्व में केसरिया किया गया था)

– अतः इस कारण बहादुर शाह ने चित्तौड पर अधिकार कर लिया था ।

– यहाँ हुमायु ने ''माँडू'' (बहादुर शाह का गढ) पर अधिकार कर लेता है । तथा गुजरात की तरफ बढने लगा इसके डर कर बहादुर शाह चित्तौड से भाग गया । तथा हुमायुँ दिल्ली वापस लौट गया ।

– मेवाड का शासन बनवीर को दे दिया

(बनवीर उडणा राजकुमार पृथ्वीराज का दासी पुत्र था)

– बनवीर ने विक्रमादित्य की हत्या कर दी लेकिन उदयसिंह को पन्नाधाय ने अपने पुत्र चन्दन का बलिदान देकर बचा लिया था ।

(उदयसिंह – सांगा का बेटा)

– पन्ना धाय उदयसिंह को लेकर कुम्भलगढ को लेकर कुम्भलगढ चली गई । वहाँ ''आशा देवपुरा'' (कुम्भलगढ के किलेदार) ने उन्हें शरण दी ।

12.<u>उदयसिंह (1537–72) (35 साल)</u>

– 1540 में मावली (उदयपुर) में बनवीर को हराकर उदयसिंह राजा बन गया ।

– ''1559'' में उदयसिंह ने ''उदयपुर की स्थापना'' की तथा यहाँ पर ''उदयसागर झील'' का निर्माण करवाया ।

(यह वह समय था जब भारत में अकबर का शासन था ।)

1568 में अकबर ने मेवाड पर आक्रमण कर दिया ।

– इस समय उदयसिंह गिर्वा की पहाडियों में चला गया

– इस समय चित्तौड का ''(तीसरा)'' साका हुआ

यह साका ''जयमल (पहले मेडता का शासक था जिसे 1562 में अकबर ने छीन लिया था तथा ये उदयसिंह के पास आ गया था) व फत्ता के नेतृत्व में हुआ था ।''

(जयमल घायल होने के कारण कल्ला राठौड के कन्धों पर बैठकर युद्ध करता है । इसलिए ''<u>कल्ला राठौड को चार हाथो वाला लोक देवता</u>'' कहा जाता है ।)

– अकबर ने इस किलें में (चित्तौड) 30,000 लोगों का नरसंहार करवाया